3

शमूएल
समर्पण की मिसाल

रोमी साम्राज्य की विजयों के समय, मिलान करने वाले क्षेत्र को बिना शर्त समर्पण के लिए बातचीत को बाध्य किया गया था। एगरियुस, जिसे रोमी साम्राज्य का राज्यपाल बनाया गया था, ने वहां के दूतों से पूछा था, ''ज़्या मिलान करने वाले लोगों का अपने ऊपर अधिकार है?'' एक स्पष्ट उज़र मिलने पर उसने फिर पूछा, ''ज़्या आप अपने आप को, अपने मन्दिर, अपने बर्तन, अपनी सारी सज़्पज़ि और लोगों का रोम के सपुर्द करते हैं?'' उनका जवाब था, ''हम करते हैं।'' उसने कहा, ''मैं तुज़्हें स्वीकार करता हूं।'' यह उदाहरण हमें पुराने नियम के एक व्यज़्ति, शमूएल का स्मरण कराता है जो पूर्ण रूप से परमेश्वर को समर्पित था।

शमूएल जीवनभर शुद्धता, भरोसे तथा धार्मिकता की मिसाल बना रहा था। एक सर्वोच्च उद्देश्य ने जन्म से मृत्यु तक उसका मार्गदर्शन किया था। उसके जीवन में न कोई बखेड़ा, न ओछापन और या किसी प्रकार की अव्यवस्था थी। सार्वजनिक जीवन से सन्यास लेने के बाद, उसने यह जोखिम उठाया जिसे आज का कोई भी सरकारी अधिकारी उठाने का सपना भी नहीं ले सकता–उसने इस्राएलियों से आग्रह किया कि यदि उसने कोई गलती की है तो वे उसे बताएं! (12:2, 3)। लोगों का जवाब खामोशी में था! किसी को उससे कोई शिकायत नहीं थी। शमूएल का इतिहास बेदाग़ था।

शमूएल के जीवन को संक्षेप में बताने तथा सेवा के प्रति उसके व्यवहार की व्याज़्या करने वाला शज़्द *समर्पण* ही है। हन्ना के गर्भ में पड़ने के दिन से अन्तिम सांस लेने तक, वह परमेश्वर के प्रति समर्पित रहा था। यह समर्पण हर युग के लोगों को वचन तथा कर्म में उनके समर्पण के बारे में एक चुनौती देता है।

जवानों को: उत्सुकता से समर्पण की चुनौती (2:11, 18-21; 3:1-21)

शमूएल के जीवन के प्रारज़्भिक वर्ष दो स्थानों पर बीते। पहले, वह रामाह में अपने माता–पिता के साथ रहता था। सज़्भवत: पहले तीन वर्ष तक वह उन्हीं के साथ रहा था। घर में उस पर उदाहरणों, प्रार्थनाओं और प्रेमपूर्वक दिए गए निर्देशों का पज़्का और गहरा असर हुआ। यह प्रारज़्भिक प्रभाव उसके लिए सिद्धांत की तरह बना, जिससे उसे बुराई से दूर रहने

और भलाई की ओर बढ़ने के लिए अगुआई मिली। इन प्रारज़्भिक वर्षों में, शमूएल को समझ आ गई कि वह यहोवा के लिए समर्पित है। उसके लिए समर्पण की भावना को समझना कठिन नहीं था ज़्योंकि उसके माता-पिता ने उसे नमूना देकर तथा शिक्षा से समझाया था।

शीलो का तज़्बू उसके बचपन के वर्षों का दूसरा स्थान था। शीलो में शमूएल की आंखों के सामने हर रोज इस्राएल की आराधना की पवित्र वस्तुएं रहती थीं। वहां पर होने वाली पवित्र रीतियों ने जीवन की उसकी सेवा के लिए उसे धीरे-धीरे, पज़्के तौर पर मोड़ दिया जिससे वह बाद में बदल नहीं सकता था।

शमूएल के उत्साही समर्पण की उत्सुकता नीचे दी गई बातों से स्पष्ट हो गई। वह एक ऐसा जवान था जो बुरे प्रभावों के बावजूद परमेश्वर के प्रति निष्ठावान बना रहा। शमूएल की उम्र के हवाले से पता चलता है कि उस समय उसकी आयु पन्द्रह वर्ष के लगभग थी (2:18; 3:1)। यह उम्र आम तौर पर जटिल, विद्रोही, तनाव और पहचान बनाने वाली होती है जिसमें ''भीड़ के साथ'' बह जाना अज़्सर आसान होता है। शमूएल इन दबावों के बावजूद स्थिर और परमेश्वर के प्रति समर्पित रहा था। शमूएल पर सबसे खतरनाक प्रभाव एली के पुत्रों का था। इसमें कोई संदेह नहीं कि होप्नी और पीनहास शमूएल को अपने दुष्कर्मों में शामिल होने के लिए उत्साहित करते होंगे, परन्तु शमूएल उनकी बातों में नहीं आया। शमूएल परमेश्वर के प्रति उनके विद्रोह, उदासीनता तथा निन्दा करने में उनका साथ दे सकता था, परन्तु वह उनके साथ नहीं मिला। शमूएल के किशोर मन पर इन दो बिगड़े लड़कों की विलासिता में शामिल होने की परीक्षा तो आई होगी, परन्तु वह परमेश्वर के प्रति ही समर्पित रहा। दुष्प्रभावों का सामना करने के बावजूद शमूएल नैतिकता और आत्मिकता में बढ़ता गया (2:21; लूका 1:80)। शमूएल से होप्नी और पीनहास के चरित्रों की तुलना करें। वे लगभग उसके ही हमउम्र थे, फिर भी उनमें और उसमें बहुत अन्तर था! (2:12, 18; 2:25, 26; 3:13, 19, 20)। इसका ज़्या कारण था? शमूएल जवानी के दिनों में भी परमेश्वर के प्रति समर्पित था! शमूएल एक ऐसा जवान था, जो उत्सुकता से परमेश्वर की बातों पर ध्यान देता था (3:10)। यदि आप शमूएल के जीवन को संक्षेप में बताने वाली एक आयत ढूंढ़ रहे हैं तो वह 3:10 है। युवावस्था में भी उसका नारा ''परमेश्वर की आज्ञा मानना'' ही था। परमेश्वर में उसकी गहरी आस्था थी। ''तेरा दास सुन रहा है'' शज़्द उस व्यज़्ति के लिए हैं जो उसी समय आज्ञा मानने के लिए खड़ा हो। जवानो, ज़्या यह बात आप पर लागू होती है? यदि आप परमेश्वर के प्रति समर्पित हैं, तो आप उसकी आज्ञाओं को सुनकर उसकी आज्ञा मानने से भी नहीं हिचकिचाएंगे और स्वेच्छा से उसकी बात मान लेंगे (सभोपदेशक 12:1, 6)।

शमूएल एक ऐसा नौजवान था जिसका सब लोग आदर करते थे (2:26; 3:21; 4:1क)। उसने ज़िज़्मेदारियों को स्वीकार किया था (3:15)। मन्दिर के दरवाजे खोलना उसका प्रमुख कार्य था। ज़िज़्मेदारी से उसके काम करने के कारण उसकी प्रतिष्ठा परमेश्वर के जन के रूप में बढ़ने लगी। जवानो, इस चुनौती को स्वीकार करो और ज़िज़्मेदारी से काम

करो जिससे आपके आस-पड़ोस के लोग आपका आदर करें (तु. नीतिवचन 3:1, 4; 1 तीमुथियुस 4:12, 15; 5:22ख)।

शमूएल ने रामाह से आरज़्भ किया और फिर वह शीलो में चला गया। उसका बचपन और बाल्यावस्था शीलो में सेवा करते हुए बीती। जवान होने तक वह एक मजबूत व्यज़्ति बन चुका था (3:19-4:1)। शीलो में प्रारज़्भिक दर्शन, इस्राएल के सामने बार-बार अपनी बातों की पुष्टि और जिज़्मेदारी से काम करने से उसे वह सज़्मान और साहस मिला जिससे वह एक वयस्क व्यज़्ति बन गया।

वयस्कों को: दृढ़-प्रतिज्ञ समर्पण की चुनौती (7:1-17)

परमेश्वर के नबी के रूप में स्थापित होने के शीघ्र बाद, लगता है शमूएल शीलो से चला गया था। संदूक के छिन जाने के बाद (4:11) शीलो पलिश्तियों के अधीन हो गया था (भजन संहिता 78:60से)। इस्राएलियों ने पलिश्तीन के अधीन रहते हुए संघर्ष किया था। रामाह में शमूएल की उपस्थिति कई तरह से बताई जाती है। कुछ लोगों का मानना है कि उसे वहां एल्काना से मीरास में भूसज़्पज़ि मिली थी। जबकि दूसरों का सुझाव है कि वह वहां होप्नी और पीनहास द्वारा शीलो में होने वाली आराधना में की गई विकृतियों के कारण चला गया था, परन्तु शमूएल का मुज़्यालय रामाह ही था।

रामाह में शमूएल ने मन फिराव के लिए इस्राएल से लगातार बीस साल तक आग्रह किया था। 7:3 के शज़्द शमूएल की बिनतियों के बारे में संक्षेप में बताते हैं। बीस साल तक प्रचार करने के बाद, शमूएल ने इस्राएल को मिस्पा में एकत्र कर इस्राएल के यहोवा की ओर लौटने की बात कही। मिस्पा में होने वाली यह सभा शमूएल के बाद के वर्षों में उसके दृढ़ समर्पण को दिखाती है।

शमूएल के जीवन का अध्ययन करते हुए, वयस्कों को निज़्न बातों में समर्पित होने की चुनौती मिलती है।

शमूएल लोगों को पूर्ण मन फिराव के लिए कहने से नहीं डरा (7:3)। उसने अन्याय की भर्त्सना की और इस्राएल को पूरी तरह से अन्यजातियों की रीतियों पर चलने से मना किया। शमूएल की इच्छा इस्राएल को अपने पापों को समझने और परमेश्वर पर भरोसा रखने की आवश्यकता को समझाने की थी। उसने सच्चे मन फिराव की मांग की! उसने इस्राएल को परमेश्वर से मेल रखने के लिए भी प्रोत्साहित किया (7:5)। वह धार्मिकता को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ भी करने को तैयार था। उसने इस्राएलियों से बिनती की, मिन्नतें कीं और तर्क किए।

फिर, उसके पास उच्च पद था (7:6)। इसलिए अपने प्रभाव से शमूएल ने इस्राएल को इकट्ठा कर लिया। पूरी कौम ने परमेश्वर के निर्देशों के प्रति अपने पाप और विद्रोह की बात मानी। यहीं पर शमूएल को इस्राएल पर ''न्यायी'' नियुज़्त किया गया था।

उसने उन्हें नेतृत्व दिया (7:8)। सहायता के लिए इस्राएल उसकी ओर देखता था जो

उनकी अगुआई कर सकता था। शमूएल का जीवन, उदाहरण तथा शिक्षा उसे एक महान अगुवे के रूप में योग्य ठहराते थे।

शमूएल ने प्रार्थना तो की ही साथ ही प्रार्थना पर निर्भर भी रहा (7:9)। इस्राएल शमूएल की प्रार्थनाओं की सामर्थ जानता था। परमेश्वर शमूएल की बिनतियों को सुनकर उनका उज़र देता था। ध्यान देने की बात है कि भजन संहिता 99:6 परमेश्वर के पास प्रार्थनाएं करने वालों में से शमूएल को उच्च स्थान दिलाता है। यिर्मयाह 15:1 में प्रार्थना की उस सामर्थ का संकेत है जो शमूएल इस्राएल के लिए अपनी बिनतियों में इस्तेमाल करता था। सब इस्राएलियों में लोगों को पता था कि शमूएल ने उनके छुटकारे के लिए प्रार्थना की है और उसकी प्रार्थनाओं से ही उन्हें युद्ध में विजय मिली थी (7:8; 8:6)। शमूएल कोई सेनापति, योद्धा या सैनिक कूटनीतिज्ञ नहीं था। वह किसी को हथियार भी नहीं दे सकता था, परन्तु उनके लिए प्रार्थना अवश्य कर सकता था। युद्ध में उन्हें विजय उसी से मिली थी! (7:10, 11)।

वह बार-बार इस्राएलियों को परमेश्वर पर उनकी निर्भरता का स्मरण दिलाता था (7:12)। वह हमेशा इस बात पर ज़ोर देता था कि इस्राएल का अस्तित्व परमेश्वर की सामर्थ के कारण है!

शमूएल के कारण उन्हें शांति, एकता और आशीषें मिली थीं (7:13, 14)। अपनी शिक्षाओं से शमूएल ने विभाजित कौम के जातीय द्वेषों को दूर करके उन्हें एक कर दिया था। इस प्रकार उसने इस्राएल के ''संयुज्त राज्य'' के लिए मार्ग तैयार किया था।

अन्त में, वह लोगों को परमेश्वर की इच्छा को सिखाने में लगा रहा (7:16)। वह जानता था कि यदि इस्राएल परमेश्वर के साथ निष्ठावान बने रहना चाहता है तो उसके लिए परमेश्वर के वचन का ज्ञान बहुत ज़रूरी है। शमूएल ने अपने तौर पर ''नबियों के विद्यालय'' आरज़्भ किए जिन्हें बाद में इस्राएल में और विस्तृत शिक्षा देने के रूप में इस्तेमाल किया गया (19:3-5, 23, 24; 2 राजा 2)।

इसलिए, जवानी का जोश और शज़्ति कम हो जाने के बावजूद, शमूएल का समर्पण बुढ़ापे में भी वैसे ही बना रहा। बहुत सी समस्याओं का सामना करने के कारण शमूएल छोड़कर जा सकता था। इस्राएल को मिस्पा तक लाने के लिए उसे लगातार बीस वर्ष तक सिखाना पड़ा। परन्तु शमूएल ''दृढ़-प्रतिज्ञ'' व्यज़्ति था। भय, तनाव और पाप से संघर्ष करने वाले बुज़ुर्गों को चाहिए कि वे भी शमूएल से प्रेरणा लेकर उसकी तरह दृढ़-प्रतिज्ञ रहें। उन्हें चाहिए कि वे भी अपने जीवनों में ऐसी ही दृढ़ता दिखाएं।

वरिष्ठ पवित्र लोगों [सेंट्स] को: संतुष्ट समर्पण की चुनौती (8:1-22; 9:6, 15-10:1,17-25; 12:1-7, 19-25)

जीवन के अगले वर्षों में भी शमूएल के समर्पण और दृढ़-प्रतिज्ञा में कमी नहीं आई। इन अंतिम वर्षों के दौरान एक बड़ा सबक मिलता है जिससे किसी के बुढ़ापे में संतुष्टि का पता चलता है। कुछ लोगों को संसार में अपने बीते वर्षों को याद करने पर दुख होता है,

परन्तु शमूएल के साथ ऐसा नहीं हुआ था। शमूएल का जीवन व्यर्थ में नहीं गुज़रा था। उसे पिछले जीवन की ओर देखकर सांत्वना और संतुष्टि मिलती थी।

पहली बात, शमूएल इसलिए संतुष्ट था ज़्योंकि वह जीवनभर परमेश्वर के प्रति समर्पित रहा था। उसके जीवन से दूसरों को सही और गलत में फर्क का पता चलता था (8:1-15)। शमूएल के विरुद्ध एक सज़्भावित कलंक उसके पुत्र थे, परन्तु उस पर एली जैसा गंभीर आरोप नहीं लगा था (2:29; 3:13)। यहां तक कि उस समय के लोग भी शमूएल पर अपने पुत्रों का पालन-पोषण सही ढंग से न करने या उनकी गलतियों के लिए उस पर कोई आरोप नहीं लगा सके थे। ज़्यों? यह स्पष्ट था कि शमूएल ने उनकी गलतियों के लिए क्षमा नहीं मांगी थी (12:2)। कुछ लोगों का सुझाव है कि शमूएल ने अपने लड़कों को सार्वजनिक पद से निकालकर दूसरों ''में'' माना था। बुज़ुर्गों ने आगे आकर शमूएल की एकाग्रता पर कोई सवाल नहीं उठाया, बल्कि साफ़ तौर पर उसके समर्पण को मान लिया था। कुछ लोगों को बुढ़ापे में आकर जीवन भर अपनाए गए आदर्शों में कुछ ढील देनी ही पड़ती है। यह वह समय होता है जब किसी की गलती की आलोचना कम होती है और गलतियां माफ कर दी जाती हैं, विशेषकर यदि गलती करने वाला व्यज़्ति घर का ही आदमी हो। परन्तु शमूएल के साथ ऐसी कोई बात नहीं थी! वह दृढ़ ही रहा था (92:12-15; होशे 12:6; इब्रानियों 10:23)।

दूसरा, शमूएल इसलिए संतुष्ट था, ज़्योंकि यहोवा के लिए उसकी धुन अभी भी वैसे ही थी (8:6)। राजा की मांग के कारण अपने अन्यजाति पड़ोसियों के जैसा बनने की इस्राएलियों की वास्तविक इच्छा का भेद खुल गया था। शमूएल को यह बात ''बुरी लगी'' थी। ''बुरी लगी'' शज़्द इब्रानी भाषा से लिया गया है जिसका इस्तेमाल भावनाओं के आहत होने, क्रोध और रोष दिखाने के लिए किया जाता है। शमूएल ने जब उनकी यह बिनती सुनी, तो वह क्रोधित हो गया। अपने पुत्रों पर लगे आरोपों के कारण या इस दावे से नहीं कि वह बहुत बूढ़ा हो गया था बल्कि इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर को ठुकराने के कारण उसे बुरा लगा था! पहला शमूएल 10:17-25 शमूएल की आहत भावनाओं को दिखाता है। भारी विरोध होने के बावजूद शमूएल परमेश्वर के आदर के लिए अडिग रहा। बूढ़ा होने के बावजूद वह चुप नहीं रहा, और न ही अपनी धुन को उसने कम होने दिया। सर्वशज़्तिमान परमेश्वर की सेवा के लिए धुन लगाकर काम करने की इच्छा करने से बड़ा और कोई समर्पण नहीं है (भजन संहिता 71:9; फिलेमोन 9)।

तीसरा, शमूएल अपने पिछले जीवन के कारण भी संतुष्ट था (9:6)। उसके नाम से प्रशंसा और आश्वासन जुड़ा हुआ था। उसे ''परमेश्वर का जन'' कहा जाता था। उसके जीवन के प्रारज़्भिक वर्ष ऐसे थे जो उसे बाद के वर्षों में बड़ा आदर। इसमें एक बड़ा सुन्दर सज़्मान है, जिसके लिए सबको कोशिश करनी चाहिए। बुढ़ापे में, ज़्या हम इतना बड़ा सज़्मान प्राप्त करेंगे? (1 इतिहास 29:28; नीतिवचन 16:31)।

चौथा, शमूएल इसलिए संतुष्ट था ज़्योंकि उसने हिचकिचाने वालों को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें अपनी सामर्थ का इस्तेमाल परमेश्वर की सेवा के लिए करने में सहायता की थी

(9:20, 21)। सज़र साल तक, उसने इस्राएल को परमेश्वर की सेवा करने और परमेश्वर को अपने राजा के रूप में पहचानने के लिए अपने आप को समर्पित किया होगा। अब उसे वह ढंग छोड़कर विपरीत दिशा में जाना चाहिए था! यह उसके उज़म निर्णय के विरुद्ध था। वह बूढ़ा हो गया था और अपने ढंग से चलता था; बिना किसी संदेह के वह जानता था कि सबसे अच्छा ढंग कौन सा है, फिर भी उसके लिए बदलना आवश्यक था! (8:22)। शमूएल नये राजा का सबसे समर्पित और सुयोग्य समर्थक बना गया था। उसने उसे संगठित करने और बनाने में सुझाव दिया। सच्चे नायक के रूप में शमूएल को उसका यही काम दूसरों से अलग करता है! उसने शाऊल को प्रोत्साहित किया, उसकी अगुआई की, और उसे समझाया। शाऊल को महान राजा बनाने में शमूएल का महत्वपूर्ण योगदान था। जब हम हार मानने, अपने अधिकारों को त्यागने और अपने निर्णय के विरुद्ध जाने को बाध्य होते हैं तो आम तौर पर ज़्या होता है? हम उस परिवर्तन के विरुद्ध होने की परीक्षा में पड़ जाते हैं और यदि हम हार भी जाएं तो हम ऐसा अनिच्छा से और दुर्भावना से करते हैं। ऐसी परिस्थितियां आने पर, बुढ़ापे में भी शमूएल के संतुष्ट होने की बात को याद रखें और तब हर तरह से परमेश्वर के लोगों की सहायता करें! (1 कुरिन्थियों 9:19-23; प्रेरितों 10:14)। विश्वासी सेंट या पवित्र जन का व्यवहार होना चाहिए (फिलिप्पियों 2:3, 4)।

पांचवां, शमूएल इसलिए संतुष्ट था ज़्योंकि परमेश्वर के लिए सज़्पूर्ण जीवन देने का उसे कोई अफसोस नहीं था। 12:1-7 में, शमूएल ने अपने जीवन की समीक्षा की। वहां उपस्थित सब लोग उसके जीवन से अच्छी तरह परिचित थे (12:2ख)। उसका काम बेदाग़ था और उसने परमेश्वर को महिमा दी थी। उसने कुछ हटकर नहीं किया। कितना धन्य है वह व्यज़्ति, जो अपने जीवन की समीक्षा करके देखता है कि उसमें किसी प्रकार के सुधार की आवश्यकता तो नहीं है! परमेश्वर के प्रति वचनबद्धता और समर्पण का आशीषित फल ऐसा ही है (2 तीमुथियुस 4:6, 7)।

मृत्यु में: पुरस्कृत समर्पण की चुनौती (25:1; 28:12-19)

शमूएल की मृत्यु से इस्राएली बहुत दुखी हुए। उसके जीवन का उन पर इतना प्रभाव था कि उसकी मौत पर ''समस्त इस्राएलियों ने'' शोक किया (25:1; उत्पज़ि 15:15)।

एन्दोर की भूतसिद्धि करने वाली स्त्री के पास शाऊल का जाना शमूएल की मृत्यु के इन तथ्यों को उजागर करता है (28:12-19) कि वह ''आराम'' में था (28:15); उसे याद करना उसके प्रति श्रद्धा तथा सज़्मान के कारण था (28:15ख); और मृत्यु के बाद भी शमूएल समर्पण का ही आग्रह कर रहा था (28:18, 19)।

मुर्दों का जीवित लोगों से शमूएल की तरह बात करना तो असंभव है, परन्तु उनका जीवन शमूएल की तरह रहा हो तो भविष्य के लिए आश्वासन भी मिल सकता है। मर चुके लोगों को विश्राम का आनन्द तभी मिलेगा यदि वे जीवन भर परमेश्वर के प्रति समर्पित रहे हों (प्रकाशितवाज़्य 14:13)। विश्वासी लोगों का स्मरण भय तथा सज़्मान का कारण है

(इब्रानियों 12:1; 13:7)। इस जहान से जा चुके पवित्र लोग, अपने सांसारिक जीवन के द्वारा हमें यहोवा परमेश्वर के प्रति समर्पित रहने की शिक्षा देते हैं।

सारांश

शमूएल के बारे में आप ज़्या सोचते हैं? उसका जीवन बहुत ही अच्छा था। एक बालक के रूप में उसने परमेश्वर की सेवा करने के लिए अपने आप को लगन से समर्पित किया था। वयस्क होने पर भी उसने सच्चाई को थामे रखने, झूठ को उजागर करने और इस्राएल को परमेश्वर की ओर आने में अगुआई करने के लिए दृढ़ता से समर्पित किया। एक वरिष्ठ नागरिक के रूप में, सफेद बालों वाले बुज़ुर्ग के रूप में, वह एक संतुष्ट व्यक्ति था। इस संसार से कूच कर जाने वाले पवित्र व्यक्ति के रूप में उसके समर्पण के कारण उसे विश्राम, सम्मान तथा प्रेरणा देने के पुरस्कार मिले।

शमूएल के समर्पण ने उसे अपने विरोधियों से ऊपर दोषरहित और शुद्ध बना दिया था। इस्राएली समाज के लिए उसका योगदान एक संत के चरित्र वाला था जिसने इस्राएल के नैतिक पतन को रोककर राजा दाऊद के द्वारा मसीहा के आने की नींव रखी। जब भी आप जीवन की समय रेखा में हों, शमूएल का जीवन आप से परमेश्वर के प्रति समर्पित होने का आग्रह करता है (12:24)। वह हमें दिखाता है कि नवजात शिशु के झूले से लेकर एक वरिष्ठ पवित्र जन की कब्र तक यहोवा के प्रति समर्पण का प्रतिफल हमेशा मिलता है! (यशायाह 46:3, 4)।

अपनी भेड़ों के दसवें भाग को अलग करना यहूदियों की रीति थी। मेमनों को मादाओं से अलग करके एक बाड़े में बंद किया जाता था जिसमें केवल एक ही तंग मार्ग होता था। मादाओं को प्रवेश द्वार पर खड़ा किया जाता था। प्रवेश द्वार पर छड़ी लेकर खड़ा एक व्यक्ति हर दसवें मेमने को छूता और उसे यह कहते हुए चिह्न लगाता था, ''यह पवित्र होगा।'' यहेजकेल ने भी इसी रूपक का इस्तेमाल किया: ''निदान जो जो पशु गिनने के लिए लाठी के तले निकल जाने वाले हैं उनका दसमांश अर्थात दस दस पीछे एक पशु यहोवा के लिए पवित्र ठहरे'' (तु. लैव्यव्यवस्था 27:32; यिर्मयाह 33:13)। आइए हम सब इस बात को समझ लें कि हम ''उस लाठी के तले निकल'' चुके हैं और शमूएल की तरह ही ''पवित्र'' ठहरे हैं।